CHILDHOOD and Growing up

Linguistic Variation (भाषाई विविधता)

भाषाई विविधता किसी विशेष भाषा के उपयोग करने के तरीके में क्षेत्रीय, सामाजिक या प्रासंगिक विविधता को संदर्भित करती है, ये विविधताएँ प्रकृति में सामाजिक होती है यह व्यक्ति को अलग करने के तरीके के रूप में घटित होती है जैसे - स्वराघात या उच्चारण। सभी भाषाएँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। इनमें अर्थ, उच्चारण एवं वाक्य विन्यास के अर्थ में भिन्न होते हैं, किसी भाषा के वक्ताओं के बीच भाषा के उपयोग में भिन्नता हो सकती है यह विभिन्नता ध्वनि एवं उच्चारण के सन्दर्भ में भाषाई विविधता को प्रदर्शित करता है। भाषा के प्रकार की अल्प विविधता होती है, जो अन्तर्समूह सम्प्रेषण से प्रभावित होती है। कभी-2 पुरुषों और महिलाओं के भाषण, विभिन्न सामाजिक वर्गों एवं आयु समूहों के बीच विविधता होती है। लोग इन्हीं भिन्नताओं को उत्तम, सर्वश्रेष्ठ या सुन्दर भाषा के रूप में चिन्हित करते हैं।

भाषाई विविधता क्षेत्रीय, सामाजिक, संदर्भगत, प्रकरण संबन्धी होता है। समाज में अधिक जटिलता पाई जाती है। जो क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से विस्तृत होता है। समाज अमूर्त होता है इसका कोई नाम नहीं होता है। समाज के लिए निश्चित भू-भाग की आवश्यकता नहीं होती है। भाषाई विविधता सामाजिक सम्बन्धों का जाल होता है।

CHILDHOOD & Growing up

Implications for a multicultural Classroom :-

आधुनिक समय में विविधता और सामाजिक सांस्कृति जागरूकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न पृष्ठभूमि से बालक आते हैं, और अपने-अपने अनुभव साझा करते हैं। इस प्रकार के कक्षा-कक्ष के निहितार्थ (लाभ) निम्न प्रकार हैं।

i) अच्छा सम्प्रेषणकर्ता (Good Communication) :- सम्प्रेषण कौशल का विकास करते हैं। बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में बालक दूसरे बालकों के साथ अच्छी तरह से संवाद करने में सक्षम होता है। इस प्रकार के कक्षा-कक्ष में छात्र विभिन्न पृष्ठभूमि के बालकों से संवाद करते हैं, जिससे उनमें सम्प्रेषण की निपुणता आती-जाती है।

2) व्यापक दृष्टिकोण का विकास :- (Developing an open mind) :- एक ही कक्षा में मौजूद विविधता के साथ प्रत्येक बालक अपने समुदाय और संस्कृति के बारे में रोचक जानकारी की कहानियों के माध्यम से आदान-प्रदान कर सकते हैं। जिससे बालकों में व्यापक दृष्टिकोण का विकास होता है। बालक एक-दूसरे की संस्कृति की गहरी समझ और प्रशंसा विकसित करते हैं। बहुसंस्कृति कक्षा न केवल छात्रों को समझने और सम्मान करने के अवसर देती है बल्कि यह वास्तविक सामाजिक जीवन कक्षा को भी प्रस्तुत करती है।

Scanned with CamScanner

3. समानुभूति निर्माण -> (Build Empathy) -> बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में छात्र तथा शिक्षकों दोनों के बीच समानुभूति का निर्माण होता है। क्योंकि इन्हें पृष्ठभूमि से कोई प्रभाव नहीं होता है। चूंकि इन कक्षाओं में अलग-२ जाति और सम्प्रदाय के बालक एक साथ आते हैं जो कक्षा को एक सकारात्मक कक्षा संस्कृति बनाने का अवसर प्रदान करता है। बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष छात्रों को विश्वास, सम्मान और सहानुभूति पर बने सम्बन्धों को गहरा और मजबूत करने के अवसर प्रदान करता है।

4) विविध उत्सव (Various Celebrations) -> बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया जाता है। ये उत्सव छात्रों आनन्द मनाने तथा स्वयं के समुदाय का प्रतिनिधित्व करने में सहयोग करता है।

5) महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ - बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष को विभिन्न संस्कृतियों और देशों को सम्मिलित करनेवाले बर्तन के रूप में माना जा सकता है। जिसमें छात्रों को विभिन्न उपलब्धियों को प्राप्त करने का अवसर प्रदान किए जाते हैं। कुछ छात्रों के लिए यह चुनौतिपूर्ण हो सकता है किन्तु यदि छात्र रुचि रखता है तो शीघ्र ही सीखने में सक्षम हो जाता है।

भूमिका — Self Esteem।

आत्म सम्मान (Self-esteem) हमारी रोज़ाना के दौरान हमारे अंदर तैयार होता है, आमतौर पर अपनी फैमली, फ्रेंड्स और सोसाइटी के द्वारा लगातार आलोचनाएं मिलना, आत्म-मूल्य की हमारी भावनाओं से दूर कर देता है। हमारी लो सेल्फ एस्टीम, हमारे अंदर किसी भी छोटे से फैसले को लेने के लिए सेल्फ-कॉन्फिडेंस को कम कर देता है। हालांकि, इस तरह की फीलिंग्स को हमेशा के लिए नहीं होना चाहिए। अपनी Self-esteem आपके कॉन्फिडेंस को बढ़ाता है और ये खुशी और बेहतर लाइफ पाने के लिए पहला स्टेप भी होता है।

1) Self-esteem को सीखें → High Self esteem का मतलब, हम जैसे भी हैं, उसी के साथ प्यार करते हैं और खुद भी स्वीकार भी करते हैं और ज्यादातर वक्त से हम Satisfy भी फील करते हैं। Low Self esteem का मतलब हम खुद को लेकर खुश नहीं हैं।

2) अपनी Self-esteem का आकलन करें →

* अगर आपकी inner voice या आपके बारे में विचार ज्यादातर आलोचनात्मक है तो शायद आपकी Self-esteem लो है।

* अगर आपकी inner voice (+) और आपको Comfort देने वाली है, तो आपकी Self esteem High है।

* अपनी अंदर की आवाज सुनें —

जब आपके मन खुद के बारे में कोई विचार आता है, तब देखें कि Negative or Positive । अगर आपको इसे पहचानने में या पैटर्न को नोटिस करने में मुश्किल हो

आत्मसम्मान एक सफल सुखी जीवन का आधारभूत तत्व है। व्यक्ति आत्मसम्मान के अभाव में सफल तो हो सकता है, बाह्य उपलब्धियों भरा जीवन भी जी सकता है किंतु वह अंदर से सुखी, संतुष्ट और संतृप्त होगा, यह संभव नहीं है आत्मसम्मान के अभाव में जीवन एक गंभीर अपूर्णता व रिक्तता से भरा रहता है। यह रिक्तता एक गहरी कमी का अहसास देती है। और जीवन एक अनजानी रिक्तता, एक अज्ञात पीड़ा, असुरक्षा और अशांति से बेचैन रहता है। आत्मसम्मान का बाहरी उपलब्धियों और सफलताओं से बहुत अधिक लेना-देना नहीं है। आत्मविश्वास स्वयं की सहज स्वीकृति, स्वप्रेम और स्व-सम्मान की व्यक्तिगत अनुभूति है, जो दूसरों की प्रशंसा, निंदा और मूल्यांकन आदि से स्वतंत्र है। आत्मसम्मान की कमी का प्रमुख कारण जीवन के नकारात्मक पक्ष में गहरा तादात्म्य की स्थिति होती है। वस्तुत: आत्मसम्मान का यथार्थ विकास इसी बिंदु पर शुरू होता है। देह की वासना, मन की तृष्णा और अहं की क्षुद्रता को पैरों तले रौंदते हुए जब हम अंतरात्मा के पक्ष में निर्णय लेते हैं तो हमारा आत्मसम्मान हमारे अस्तित्व को आत्मगौरव की एक नई चमक देता है।

Scanned with CamScanner

क्या आत्मसम्मान मानव व्यवहार को प्रभावित करता है?

Childhood & Growing up

* Bilingual or Multilingual Children: Implications for the teachers

अधिकांश परिवारों में द्विभाषिकता या बहुभाषिकता पाई जाती है। बच्चे जब दो भाषाओं का ज्ञान रखते हैं तो उन्हें द्विभाषी बच्चे कहा जाता है, कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं। जिन्हें अपने विशेष वातावरण के कारण दो से अधिक भाषाओं की जानकारी होती है, उन्हें बहुभाषी बच्चे कहा जाता है। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिन्हें मात्र एक ही भाषा की जानकारी होती है। उन्हें बहुभाषी बच्चे कहा जाता है। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं। जिन्हें मात्र एक ही भाषा की जानकारी होती है। उन्हें एकलभाषी बच्चे कहते हैं। इन तीन प्रकार के बच्चों में द्विभाषी बच्चों की बहुलता है। प्रायः ऐसे बच्चे घर-परिवार में हिन्दी बोलते हैं तो स्कूल एवं कॉलेजों में अंग्रेजी बोलते हैं। कुछ बच्चे जिनका परिवार मौलिक रूप से दक्षिण भारत का है। तथा उत्तर भारत के किसी शहर में कुछ दिन रह जाते हैं तो वे बहुभाषी बन जाते हैं। वे बच्चे घर-परिवार में तेलगु भाषा, स्कूल में अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं।

Scanned with CamScanner

द्विभाषिक या बहुभाषिक बच्चों की विशेषताएं-

1) द्विभाषिक या बहुभाषिक बच्चों में कुट-संकेतन-परिवर्तन क्षमता अधिक होती हैं। कुट संकेत परिवर्तन क्षमता का परिवर्तन तात्पर्य दोनों भाषाओं में से किसी भाषा के शब्दों का चयन करके बोलने की क्षमता से होती हैं। यदि किसी बच्चे में कुट-संकेतन-परिवर्तन क्षमता अधिक होती है, तो ऐसे द्विभाषिक बच्चे दूसरे बच्चे को प्रस्तावित सूचना को तेजी से समझकर ग्रहण कर लेते है।

2) द्विभाषिक बच्चों का व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान तथा अर्थज्ञान विस्तृत होता है। भिन्न सम्बन्धित भाषा से शब्दों के प्रत्याह्वान या प्रत्याभिज्ञान की क्षमता अधिक होती है।

3) द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से सम्बन्धित तीसरी विशेषता यह है कि भाषा में समानता होने से बच्चों को दूसरे की आवाज पहचानने में सहायता मिलती है। ओविंगन तथा उनके अन्य सहयोगियों द्वारा किए गए अनुसंधान से इस विशेषता को समर्थन मिला है।

Childhood & Growing up

द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से बच्चों को होने वाले लाभ →

1) संज्ञानात्मक विकास → भाषा की संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। मस्तिष्क के विचारों का प्रसार बहुभाषी या द्विभाषी संगठन के माध्यम से विकसित करता है। दो अलग-2 भाषाओं में सोचने की क्षमता एक परिष्कृत मानसिक व्यायाम है जो द्विभाषिक बच्चों को स्वाभाविक रूप में आता है, शब्दावली एवं व्याकरण का दो भाषाओं में ज्ञान एक अद्भुत मानसिक योजना है जो बच्चों के मस्तिष्क विकास में योगदान देती है।

2) शैक्षिक लाभ → संज्ञानात्मक विकास के समान बहुभाषावाद या द्विभाषावाद से बच्चों को शैक्षिक लाभ भी होता है। बहुभाषावाद / द्विभाषावाद से बच्चों में जल्दी पढ़ने, प्रतियोगिता परीक्षाओं में समस्याओं को सुलझाने की क्षमताओं, भाषा, पठन एवं लेखन आदि में सुधार एवं विकास होता है।

3) रोजगार में लाभ → बहुभाषी बच्चे शैक्षिक लाभ प्राप्त करने के साथ-2 रोजगार सम्बन्धी लाभ भी प्राप्त करते हैं। यह रोजगार के अवसरों के लिए व्यापक एवं विभिन्न विकल्प प्रस्तुत करता है।

Scanned with CamScanner

4). सांस्कृतिक लाभ → वैश्वीकरण के युग मे बच्चों के के सांस्कृतिक विकास के लिए द्विभाषिकता या बहुभाषिकता का महत्वपूर्ण योगदान है। बहुभाषी होने पर बच्चे विभिन्न भाषाओं के साहित्यों का ज्ञान, इतिहास लोकगीत, संगीत, फिल्मों एवं कविताओं आदि का ज्ञान एवं आनन्द सरलतापूर्वक ले सकते हैं।

5) भावनात्मक लाभ → द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से बच्चों का भावनात्मक विकास भी होता है। उदाहरण स्वरूप यदि किसी बच्चे के माता-पिता अलग-2 भाषी हैं, तो बच्चा द्विभाषा का ज्ञान प्राप्त करके अपने-आपको बेहतर महसूस करता है। एकभाषी बच्चों की अपेक्षा स्कूलों मे भी इनका सकारात्मक रवैया रहता है।

6) द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से बच्चों को होने वाली हानि :

i) प्रारम्भ मे बच्चों को अपनी मातृभाषा का ही ज्ञान होता है, इसलिए मध्यम वर्ग या निम्न वर्ग के बच्चों को दूसरी भाषा सीखने मे कठिनाई महसूस होती है।

ii) अनेक परिवारों से आए हुए बच्चों की मातृभाषा को हेय दृष्टि से देखा जाता है। जिसका दुष्प्रभाव उनके मानसिक विकास पर भी पड़ता है।

iii) छोटे बच्चे किसी भी तथ्य को अपनी भाषा मे जितनी जल्दी सरलता से सीख सकते हैं। उतनी जल्दी एवं सहजता से अन्य भाषाओं मे नहीं सीख सकते हैं।

Scanned with CamScanner